परिसर अध्ययन

तीसरी कक्षा

अकोला जिला

शिक्षण विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं/२०१४-१५/५००८/मंजूरी/ड-५०५/१९६५ दिनांक : २७/३/२०१४

परिसर अध्ययन

तीसरी कक्षा

आपके स्मार्टफोन में ‘DIKSHA App’ द्‌वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‌यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

अकोला जिला

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-४११००४

प्रथमावृत्ति : २०१४ © महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

छठवाँ पुनर्मुद्रण : २०२० इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

शास्त्र विषय समिति :

- **डॉ रंजन केळकर, अध्यक्ष**
- डॉ. विद्याधर बोरकर, सदस्य • श्रीमती मृणालिनी देसाई, सदस्य
- डॉ. दिलीप रा. पाटील, सदस्य • श्री अतुल देऊळगावकर, सदस्य
- डॉ. बाळ फोंडके, सदस्य
- श्रीमती विनिता तामणे, सदस्य-सचिव

इतिहास विषय समिति :

- **डॉ. आ. ह. साळुंखे, अध्यक्ष**
- डॉ. सदानंद मोरे, सदस्य • प्रा. हरी नरके, सदस्य
- ॲड. गोविंद पानसरे, सदस्य • श्री अब्दुलकादिर मुकादम, सदस्य
- डॉ. गणेश राऊत, सदस्य • श्री संभाजी भगत, सदस्य
- श्री प्रशांत सरूडकर, सदस्य
- श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

भूगोल विषय समिति :

- **डॉ. एन. जे. पवार, अध्यक्ष**
- डॉ. मेधा खोले, सदस्य • डॉ. इनामदार इरफान अजिज, सदस्य
- श्री अभिजित घोरपडे, सदस्य • श्री सुशीलकुमार तिर्थकर, सदस्य
- श्रीमती कल्पना माने, सदस्य
- श्री रविकिरण जाधव, सदस्य-सचिव

नागरिक शास्त्र विषय समिति :

- **डॉ. यशवंत सुमंत, अध्यक्ष**
- डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य • डॉ. शैलेंद्र देवळाणकर, सदस्य
- डॉ. उत्तरा सहस्रबुद्धे, सदस्य • श्री अरुण ठाकूर, सदस्य
- श्री वैजनाथ काळे, सदस्य
- श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

मानचित्रकार : श्री रविकिरण जाधव
मुखपृष्ठ : श्री निलेश जाधव
चित्र एवं सजावट : श्री निलेश जाधव, श्री प्रतिम कसबेकर, श्री दीपक संकपाळ, श्री देविदास पेशवे, श्री नरेंद्र बारई, श्री संजय शितोळे, प्रा. राही कदम, श्री नितीन राऊत, श्री मनोज कांबळे

अक्षरांकन : समृद्धी, पुणे
कागज : ७० जी.एस्.एम्. क्रीम वोव
मुद्रणादेश :
मुद्रक :

संयोजक

श्रीमती विनिता तामणे, **विशेषाधिकारी शास्त्र**
श्री मोगल जाधव, **विशेषाधिकारी इतिहास एवं नागरिक शास्त्र**
श्री रविकिरण जाधव, **विशेषाधिकारी भूगोल**

भाषांतर संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, **विशेषाधिकारी हिंदी**

संयोजन सहायक :
सौ. संध्या वि. उपासनी, **विषय सहायक हिंदी**

भाषांतरकार : श्री शालिग्राम तिवारी, कु. मंजुला त्रिपाठी
समीक्षक : श्री शशि निघोजकर, श्रीमती पूर्णिमा पांडेय

विशेषज्ञ : श्री प्रकाश बोकील, सौ. वृंदा कुलकर्णी, डॉ. प्रमोद शुक्ला, श्री हरीश कुमार खत्री

निर्मिति

श्री सच्चितानंद आफळे, **मुख्य निर्मिति अधिकारी**
श्री दीपक शेकटकर, **निर्मिति अधिकारी**
श्री हेमंत बाबर, **निर्मिति सहायक**

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बालकों का नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम – २००९, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप – २००५ और महाराष्ट्र राज्य पाठ्यक्रम प्रारूप २०10 के अनुसार राज्य का प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम – २०1२ तैयार किया गया है। सरकार द्‌वारा स्वीकृत इस पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की नई शृंखला पाठ्यपुस्तक मंडल शैक्षिक वर्ष २०1३–२०1४ से क्रमश: प्रकाशित कर रहा है । इस शृंखला की 'परिसर अध्ययन : तीसरी कक्षा' की पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें विशेष आनंद की अनुभूति हो रही है ।

अध्ययन – अध्यापन की संपूर्ण प्रक्रिया बालकेंद्रित होनी चाहिए, कृतिप्रधानता एवं ज्ञानरचनावाद पर बल दिया जाना चाहिए, प्राथमिक शिक्षा के अंत में विद्यार्थी निर्धारित की गयी न्यूनतम क्षमताएँ एवं जीवन कौशल प्राप्त कर सकें, शिक्षण–प्रकिया रोचक एवं आनंददायी हो आदि महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्यों को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की गई है । साथ ही, पाठ्यक्रम में दर्शाए गए दस केंद्रीय तत्त्वों का अनुसरण करके प्रस्तुत पुस्तक का लेखन किया गया है ।

इस पुस्तक में पर्याप्त संख्या में रंगीन चित्र हैं । चित्रों की भाषा के माध्यम से विषय वस्तु के आकलन एवं ज्ञानरचना को प्रभावकारी बनाने का प्रयत्न किया गया है । इस पुस्तक में 'करके देखो', 'थोड़ा सोचो' – ऐसे शीर्षकों के अंतर्गत कृतियाँ भी दी गई हैं । इससे विद्यार्थियों को पाठ्यांशों के संबोधों एवं संकल्पनाओं के आकलन एवं दृढ़ीकरण में मदद मिलेगी । साथ ही यह पुस्तक उन्हें परिवेश के निरीक्षण के लिए प्रेरणा एवं योग्यता प्रदान करेगी । समय के अनुरूप और विषय वस्तु से सुसंगत जीवन मूल्यों को भी विद्यार्थियों में निरूपित करने का प्रयत्न किया गया है ।

पाठ्यांश के संबोधों का पुनरावर्तन हो, उनका स्थिरीकरण हो, स्वयं अध्ययन को प्रेरणा मिले – इन उद्‌देश्यों को ध्यान में रखकर स्वाध्यायों में भी विविधता लाई गई है । स्वाध्यायों का स्वरूप रोचकता से समृद्‌ध है । इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात पर भी विचार किया गया है कि शिक्षक भी विद्यार्थियों का सातत्यपूर्ण सर्वव्यापी मूल्यमापन कर सकें ।

इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी अपने प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को पहचानेंगे । परिसर की ओर देखने का उनका दृष्टिकोण निर्मल हो, उनमें समस्याओं के निराकरण और अनुप्रयोग के कौशलों का विकास हो, ऐसा प्रयास किया गया है ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक की भाषा विद्‌यर्थियों के आयुवर्ग के अनुकूल है । विषयों का विज्ञान, भूगोल, इतिहास तथा नागरिक शास्त्र के रूप में विभाजन न करते हुए सभी विषयों का विन्यास अंतर्ज्ञान शाखा की दृष्टि से किया गया है । इससे किसी प्रश्न तथा विषय के अनेक आयामों को एक ही साथ सीखने की दृष्टि विकसित होगी । महाराष्ट्र के सभी विद्‌यार्थियों के अनुभव जगत को ध्यान में रखकर परिसर अध्ययन की यह पाठ्यपुस्तक तैयार करने का प्रयत्न पाठ्यपुस्तक मंडल ने पहली बार किया है । इस पुस्तक को अधिक से अधिक निर्दोष एवं स्तरीय बनाने की दृष्टि से महाराष्ट्र के सभी भागों से चुने हुए शिक्षकों, कुछ शिक्षातज्ञों, विषयतज्ञों तथा पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों से इस पुस्तक की समीक्षा कराई गई है । प्राप्त सूचनाओं तथा सुझावों पर यथोचित विचार करके विषय समितियों द्‌वारा इस पुस्तक को अंतिम स्वरूप दिया गया है।

मंडल की विज्ञान, इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र विषयों की समितियों के सदस्यों, कार्यगट के सदस्यों, गुणवत्ता परीक्षक तथा चित्रकार के आस्थापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार हुई है । मंडल इन सभी का हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‌यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं.रा.बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे :
दिनांक : ३१ मार्च, २०१४–गुढीपाडवा

शास्त्र विषय कार्यगट सदस्य : • श्रीमती सुचेता फडके • श्री वि. ज्ञा. लाळे • श्रीमती संध्या लहरे • श्री शैलेश गंधे • श्री अभय यावलकर • श्री राजाभाऊ ढेपे • डॉ. शमीन पडळकर • श्री विनोद टेंबे • डॉ. जयसिंगराव देशमुख • डॉ. ललित क्षीरसागर • डॉ. जयश्री रामदास • डॉ. मानसी राजाध्यक्ष • श्री सदाशिव शिंदे • श्री बाबा सुतार • श्री अरविंद गुप्ता

इतिहास विषय कार्यगट सदस्य : • डॉ. शुभांगना अत्रे • डॉ. मंजुश्री पवार • प्रा. प्रतिमा परदेशी • प्रा. देवेंद्र इंगळे • प्रा. यशवंत गोसावी • श्री संजय वझरेकर • श्री राहुल प्रभू • श्री संदीप वाक्चौरे • श्री मुरगेंद्र दुगाणी • श्री अरुण हळबे • प्रा. मोहसिना मुकादम • डॉ. एस. आर. वाजे

भूगोल विषय कार्यगट सदस्य : • श्री भाईदास सोमवंशी • श्री विकास झाडे • श्री टिकाराम संग्रामे • श्री गजानन सूर्यवंशी • श्री पद्माकर प्रल्हादराव कुलकर्णी • श्री समनसिंग भिल • श्री विशाल आंधळकर • श्रीमती रफत सैय्यद • श्री गजानन मानकर • श्री विलास जामधडे • श्री गौरीशंकर खोबरे • श्री पुंडलिक नलावडे • श्री प्रकाश शिंदे • श्री सुनील मोरे • श्रीमती अपर्णा फडके • डॉ. श्रीकृष्ण गायकवाड • श्री अभिजित दोड • डॉ. विजय भगत • श्रीमती रंजना शिंदे • डॉ. स्मिता गांधी

नागरिक शास्त्र विषय कार्यगट सदस्य : • डॉ. श्रीकांत परांजपे • प्रा. साधना कुलकर्णी • डॉ. चैत्रा रेडकर • डॉ. बाळ कांबळे • प्रा. फकरूद्दीन बेन्नूर • प्रा. नागेश कदम • श्री मधुकर नरडे • श्री विजयचंद्र थत्ते

The following footnotes are applicable :-
1. © Government of India, Copyright 2014.
2. The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher.
3. The territorial waters of India extend into sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
4. The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh.
5. The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act.,1971," but have yet to be verified.
6. The external boundaries and coastlines of India agree wih the Record/Master Copy certified by Survey of India.
7. The state boundaries between Uttarakhand and Uttar Pradesh, Bihar and Jharkhand and between Chattisgarh and Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned.
8. The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

परिसर अभ्यास तीसरी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया		अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों को अनुभवों का अवसर गुट/जोड़ी-जोड़ी से व्यक्तिगत रूप से देकर उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना –		**विद्यार्थी –**
• आसपास का परिवेश जैसे – घर, विद्यालय और पड़ोस का निरीक्षण कर विविध वस्तु/पक्षी की खोज करना, निरीक्षण करना और निरीक्षणात्मक विशेषताएँ (जैसे – विविधता, दृश्यरूप, हलचल, अधिवास, आदतें, आवश्यकताएँ, वर्तन आदि) खोजना।	03.95.01	सामान्य रूप से अवलोकन द्वारा पहचाने जाने वाले लक्षणों (आकार, रंग, बनावट, गंध) के आधार पर अपने आसपास के परिवेश में उपलब्ध पेड़ों की पत्तियों, तनों एवं छाल को पहचानते हैं। अपने परिवेश में पाए जाने वाले प्राणी/पक्षियों के सामान्य लक्षणों (जैसे – हलचलें, वे स्थान जहाँ वे पाए/रखे जाते हैं, भोजन की आदतें, उनकी ध्वनियाँ) के आधार पर पहचानते हैं।
• घर/परिवार का निरीक्षण करना, इन विषयों के संबंध में खोज करना । लोग किनके साथ रहते हैं, वे क्या काम करते हैं ? उनकी शारीरिक विशेषताएँ, उनकी आदतें तथा अनुभव, रिश्ते-नाते संबंध, अलग-अलग तरह से सामाईक करना।	03.95.02	परिवार के सदस्यों के साथ अपने तथा उनके आपस के संबंधों को समझते हैं।
• अपने आसपास के परिवेश में यातायात के साधन/संप्रेषण माध्यम और कौन-सा कार्य है, इसकी खोज करना।	03.95.03	अपने घर / विद्यालय/आसपास की वस्तुओं (बर्तन, चूल्हे, यातायात, संप्रेषण के साधन, साइनबोर्ड आदि), स्थानों (विभिन्न प्रकार के घर / आधिवास के प्रकार, बस स्टैंड, पेट्रोल पंप आदि), गतिविधियों (लोगों के कार्यों, खाना बनाने की प्रक्रिया आदि) को पहचानते हैं।
• उनका घर/विद्यालय, रसोईघर खाद्य पदार्थ, बर्तन, चूल्हा, इंधन और पदार्थ पकाने (बनाने) की पद्धति का निरीक्षण करना।		

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया

- अपने आसपास के बुजुर्ग व्यक्तियों से चर्चा कर स्वयं/ पक्षी/प्राणी, जल और अन्न कहाँ से प्राप्त करते हैं, इसकी जानकारी लेना । हम वनस्पतियों का कौन-सा हिस्सा खाते हैं आदि । साथ ही रसोईघर में कौन काम करते है, कौन क्या खाता है, कौन अंत में खाना खाता है खोजना ।
- आसपास के परिवेश के स्थलों को भेंट देना । जैसे - बाजार जाकर क्रय/विक्रय प्रणाली का निरीक्षण करना, पत्र का डाकघर से घर तक यात्रा का अवलोकन करना स्थानीय जलाशयों को भेंट देना आदि ।
- प्रश्न तैयार करना और पूछना, सहपाठी और वरिष्ठों को निर्भयता से और निःसंकोच प्रतिसाद देना ।
- चित्रों/चिह्नों/आरेखन कर/अभिनय द्वारा/शब्दों के सहारे/थोड़े शब्दों में/उसकी स्वयं की भाषा में आसान वाक्यों में अनुभव/ निरीक्षणों को उभयनिष्ठ (सामायिक) करना ।
- वस्तुओं के निरीक्षणात्मक विशेषताओं में साम्य (समानता)/भेद (अंतर) की तुलना कर उनका वर्गीकरण करना ।
- माता-पिता/अभिभावक/दादा-दादी/बुजुर्ग, पड़ोसियों से चर्चा करें/कपड़े, बर्तन, लोगों के काम, खेलों की तुलना करना ।
- छोटे कंकड़/मनके/गिरे हुए पत्ते/झड़े हुए पंख/चित्रों आदि आसपास के परिवेश से वस्तुओं का अनोखे (अलग) पद्धति से संग्रह करना । जैसे - ढेर लगाना/छोटी थैलियों में/पुड़ियों में इकट्ठा करना (जमा करना)। उनकी संरचना करना ।
- परिवेश की घटना/परिस्थिति/घटित, इनका विश्लेषणात्मक/ सूक्ष्मता से अध्ययन करें और उस विषय में संभावनाएँ बनाए साथ ही जाँच करना/सत्यता जाँच लेना। जैसे - किसी स्थान पर जाने के लिए किस दिशा में जाना ? (दाए/ बाँए/आगे पीछे)
- समान आकारमान के बर्तन में ज्यादा पानी है क्या ? एकाध लोटा भरने के लिए कितने चम्मच पानी लगेगा ? बाल्टी भरने के लिए कितने लोटे पानी लगेगा ? आदि ।
- उनके ज्ञानेंद्रियों के क्षमतानुसार निरीक्षण करना, सूँघना, चखना, स्पर्श करना, सुनना, ऐसी आसान कृतियाँ और प्रात्यक्षिक (प्रयोग) कर उनका उपयोग वस्तु/गुण, विशेषताएँ/पदार्थ पहचानकर उनका वर्गीकरण करना और उनमें अंतर करना ।
- प्रात्यक्षिक और कृतियों के आधार पर निरीक्षण और अनुभव प्राप्त कर वह मौखिक रूप/अभिनय/रेखाटन/ तक्ते की सहायता से आसान वाक्यों में लिखकर उभयनिष्ठ (सामायिक) करना ।
- उपलब्ध/निरुपयोगी वस्तु, गिरे हुए, सूखे पत्ते, फूल, मिट्टी, कपड़े के टुकड़े, छोटे पत्थर, रंगों का इस्तेमाल कर नक्काशी करना/कोलाज आदि तैयार करना । जैसे - मिट्टी से बर्तन, प्राणी, पक्षी, यातायात के साधन बनाना, खाली माचीस के डिब्बों से/कार्डशीट कागज से फर्निचर (टेबल/कुर्सी) बनाना ।

अध्ययन निष्पत्ति

03.95.04	मौखिक /लिखित/अन्य तरीकों से परिवार के सदस्यों की भूमिका, परिवार का प्रभाव (गुणों/लक्षणों/आदतों/व्यवहार) एवं साथ रहने की आवश्यकता का वर्णन करते हैं ।
03.95.05	विभिन्न आयुवर्ग के व्यक्तियों, प्राणियों और पेड़-पौधों के लिए पानी तथा भोजन की उपलब्धता एवं घर तथा परिवेश में पानी के उपयोग का वर्णन करते हैं ।
03.95.06	समानताओं / असमानताओं के अनुसार वस्तुओं, पक्षियों, प्राणियों, लक्षणों, गतिविधियों को विभिन्न ज्ञानेंद्रियों के उपयोग द्वारा पहचान कर उनके समूह बनाते हैं ।
03.95.07	वर्तमान और पहले की (बड़ों के समय की) वस्तुओं और गतिविधियों (जैसे - कपड़े / बर्तन / खेलों / लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्यों) में अंतर करते हैं ।
03.95.08	चिह्नों द्वारा / संकेतों द्वारा/बोलकर सामान्य मानचित्रों (घर / कक्षा-कक्ष / विद्यालय के) में दिशाओं, वस्तुओं/ स्थानों की स्थितियों की पहचान करते हैं ।
03.95.09	दैनिक जीवन की गतिविधियों में वस्तुओं के गुणों का अनुमान लगाते हैं, मात्राओं का आकलन करते हैं तथा उनकी संकेतों एवं अमानक इकाइयों-बित्ता / चम्मच / मग आदि द्वारा जाँच करते हैं ।
03.95.10	विभिन्न स्थान, कृतियाँ, वस्तुओं संबंधी अपना निरीक्षण, अनुभव, जानकारी विविध पद्धतियों से अंकन करते हैं (चंद्रकलाएँ, ऋतु) ।
03.95.11	विभिन्न चित्र, डिजाइन, रूपचिह्न बनाते हैं । प्रतिकृति विभिन्न वस्तुओं के ऊपर से, सामने से अथवा साइड से दिखाई देने वाले दृश्य बना सकते हैं, साधारण मानचित्र (कक्षा, विद्यालय, घर के विभाग आदि) बनाते हैं और घोषवाक्य, कविता लिख सकते हैं तथा कविताओं आदि की रचना करते हैं ।
03.95.12	विभिन्न खेलों में (स्थानीय, मैदानी, अंतर्गृही आदि) तथा अन्य सामूहिक उपक्रमों के नियमों का अवलोकन करते हैं ।
03.95.13	अच्छे, बुरे स्पर्शों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हैं ।
03.95.14	परिसर के वृक्ष, प्राणी, बुजुंग, दिव्यांग और विविध पारिवारिक रचनाओं संबंधी संवेदना दिखाते हैं ।
03.95.15	शहर और गाँव में अंतर बताना।
03.95.16	अपने जिले के, तहसील के यातायात की सुविधाएँ और प्रसिद्ध स्थानों को (जगहों को) मानचित्रों में दर्शाते हैं ।
03.95.17	मानचित्र के आधार पर जिला, राज्य, देश आदि की जानकारी दिशाओं के अनुसार बताना ।
03.95.18	दिन-रात के साथ सजीवों के क्रियाओं से संबंध बताना ।
03.95.19	मनुष्य की जरूरतों से व्यवसाय और उद्योगों की निर्मिति होती है - बताते हैं ।
03.95.20	परिसर के प्राणी/पक्षियों के अधिवास, उनकी विशेषताएँ, समानता और अंतर के अनुसार वर्गीकरण करते हैं ।

टिप्पणी : इस पुस्तक में दिए गए राष्ट्रीय ध्वज के रंग यदि प्रमाणित रंग छटाओं के अनुसार न हों तो उसका कारण तकनीकी सीमाएँ है ।

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	हमारे आस-पास	१
२.	अरे भई ! कितने प्रकार के ये प्राणी	७
३.	निवास अपना-अपना	१५
४.	दिशाएँ और मानचित्र	२०
५.	समय का बोध	३०
६.	हमारे गाँव का परिचय	३३
७.	हमारा गाँव, हमारा शहर	३८
८.	पानी - हमारी आवश्यकता	४६
९.	पानी निश्चित रूप से कहाँ से आता ?	५३
१०.	पानी संबंधी कुछ जानकारी	५८
११.	हवा - हमारी आवश्यकता	६५
१२.	भोजन - हमारी आवश्यकता	६९
१३.	हमारा आहार	७४
१४.	आओ, रसोईघर में जाएँ ...	८१
१५.	हमारा शरीर	८६
१६.	ज्ञानेंद्रियाँ	९२
१७.	सुंदर दाँत, स्वस्थ शरीर	१०१
१८.	हमारा परिवार तथा घर	१०६
१९.	हमारी पाठशाला	११२
२०.	हमारा सामूहिक जीवन	११९
२१.	सामूहिक जीवन के लिए सार्वजनिक प्रबंध	१२३
२२.	हमारी आवश्यकताएँ कौन पूरी करता है ?	१२७
२३.	जैसे-जैसे आयु बढ़ती है	१३३
२४.	हमारे कपड़े	१३८
२५.	आस-पास होने वाले परिवर्तन	१४३
२६.	तीसरी से चौथी में जाते हुए	१५०